कनक रेले

संगीत नाटक अकादेमी रत्न सदस्यता

11 जून 1937 में मुम्बई में जन्मी, श्रीमती कनक रेले भारतीय नृत्य जगत की एक ख्यातिप्राप्त महिला हैं. एक कलाकार और शिक्षक के रूप में अपने विकास के दौरान आपको करुणाकर पणिक्कर एवं राघवन नैय्यर से कथकलि, नाना कसर से भरतनाट्यम, और चिन्नाम्मु अम्मा से मोहिनीआट्टम सीखने का अवसर प्राप्त हुआ.

पिछले पचास वर्षों में, दुनियाभर के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय नृत्य समारोहों में अपनी कला का प्रदर्शन कर आपने स्वयं को एक कलाकर और शिक्षक के रूप में प्रतिष्ठित किया है. नृत्य शिक्षा के क्षेत्र में वह एक प्रवर्तक के रूप में जानी जाती हैं, जिन्होंने सन् 1966 में स्थापित नालंदा नृत्य अनुसंधान केन्द्र, और सन् 1973 में स्थापित नृत्य कला महाविद्यालय का संस्थापन व संचालन किया. इससे पहले, मुम्बई विश्वविद्यालय में कला संकाय अध्यक्ष के रूप में श्रीमती रेले ने वहाँ नृत्य व अन्य कला क्षेत्रों में नए पाठ्यक्रमों की शुरुआत करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. जो इस पारंपरिक नृत्य के प्रारंभिक शैक्षिक अन्वेषणों में से एक है। उन्हें मोहिनीआट्टम में अनुसंधान के लिए मुम्बई विश्वविद्यालय द्वारा वाचस्पति की उपाधि से भी सम्मानित किया गया है. श्रीमती रेले की मंच प्रस्तुतियों में अधिकतर केरल के विभिन्न कला रूपों से लिए गए तत्वों से संपन्न नृत्य–नाटिकाएं शामिल हैं. नालंदा के अलावा अपने शिक्षण के विस्तार हेतु श्रीमती रेले ने देश–विदेश में प्रतिष्ठित संस्थानों के तत्वाधान में व्याख्यान प्रदर्शनों का आयोजन किया है. वह नृत्य के विषय पर दो पुस्तकें भी लिख चुकी हैं – मोहिनीअट्टम : द लिरिकल डांस (1992), एवं भाव निरुपण (1996)– तथा साथ ही उन्होंने हैंडबुक ऑफ इंडियन डांस टर्मिनोल जी नामक पुस्तक का संपादन भी किया है. इसके अतिरिक्त उन्होंने पत्रिकाओं में नृत्य से संबंधित कई लेखों का भी प्रकाशन किया है।

नृत्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए, श्रीमती कनक रेले को गुजरात सरकार के गौरव पुरस्कार (1989), पद्मश्री (1990), और संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार (1994) सहित विभिन्न अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

श्रीमती कनक रेले को भारतीय नृत्य के प्रति उनके विशिष्ट योगदान के लिए संगीत नाटक अकादेमी का रत्न सदस्य चुना जाता है।